काव्य में बिम्बधर्मिता

डॉ0 भाकुन्तला कुमारी

भाषा जब मस्तिष्क में ऐसा चित्रोत्थापन करती है जिससे भावक या मानस अपनी पृष्ठभूमि के आधार पर उक्त रूप का साक्षात् अनुभव कर संवेदित होता है तब उसे काव्य–बिम्ब की तरह पहचाना जाता है। यह मन्तव्य बिम्ब और काव्यभाषा के अनिवार्य सम्बन्ध की प्रतीति कराता है। ह्यूम जब काव्यभाषा को चाक्षुष प्रत्यक्ष कराने की दायित्वपूर्ति से जोड़ते हैं तब इसी सम्बन्ध को रेखांकित करते हैं। उनके अनुसार काव्यभाषा संवेदनाओं को रूपायित कर संप्रेषित करती है और यह रूपायन ही बिम्ब निर्माण है। यह दृष्टिकोण स्पष्टतः काव्यभाषा एवं बिम्ब के परस्परावलम्बन को प्रकट करता है।